वैज्ञानिक सोच को डस रहा है अंधविश्वास

डॉ. इरफान ह्यूमन

काले जादू के खिलाफ मुहिम चलाने वाले सामाजिक कार्यकर्ता नरेन्द्र दाभोलकर विज्ञान दिवस पर फिर याद आए, जिनकी पुणे में दो अज्ञात हमलावरों द्वारा गोली मार कर हत्या कर दी गई थी। उस समय इसको लेकर देश भर में विरोध प्रदर्शन एवं सभाओं का आयोजन किया गया था, लेकिन अब सब शांत।

नरेंद्र दाभोलकर प्रगतिवादी विचारधारा की पत्रिका *साधना* के संपादक थे। उन्होंने समाज में व्याप्त अंधवि वासों को खत्म करने और वैज्ञानिक चेतना जगाने के लिए चलाए जा रहे अभियान अंधश्रद्धा निर्मूलन समिति की अगुवाई की थी, यही अभियान उनकी मौत का कारण बना। बेशक इस हत्या के पीछे धर्म और समाज के ऐसे ठेकेदार शामिल होंगे, जिनको अपना अंधविश्वास का धंधा बंद होता नज़र आ रहा होगा। इस श्रेणी में अधिकांशतः राजनेताओं के शामिल होने से इंकार नहीं किया जा सकता, जो किसी न किसी मानसिक दवाब या अवसाद में रहते हैं, जिसके चलते प्रायः अंधविश्वासी कार्यकलापों से घिरे दिखाई देते हैं।

महाराष्ट्र के सातारा ज़िले के रहने वाले दाभोलकर सामाजिक कुप्रथाओं और अंधविश्वास के खिलाफ कानून लाने के लिए महाराष्ट्र विधानसभा में एक विधेयक लाने का प्रयास कर रहे थे लेकिन कुछ लोग उनकी इस मुहिम के खिलाफ थे। ऐसे बहुत से लोग अंधविश्वासी कार्यकलापों में लिप्त दिखाई देते हैं। इनमें पढ़े-लिखे लोगों की संख्या भी कम नहीं है। ऐसे लोग ढोंगी बाबाओं की शरण में जाना बुरा नहीं मानते या ऐसे बाबाओं को संरक्षण प्रदान कर अंधविश्वास के प्रचार-प्रसार में सहायता करते हैं।

अंधविश्वास के चलते भारत के दूर-दराज़ के इलाकों में विचित्र घटनाएं घटित होती है। बात सितम्बर माह की है। झारखंड की राजधानी रांची से 50 किलोमीटर दूर एक गांव में 18 साल की लड़की मांगली मुंडा की शादी सिर्फ इसलिए शेरू नामक एक कुत्ते से करा दी गई क्योंकि गांव के बाबा ने लड़की के परिजनों से कहा था कि लड़की के अंदर प्रेत-बाधा है और कुत्ते से शादी नहीं कराई गई, तो परिवार तबाह हो जाएगा। इस शादी के लिए लड़की, लड़की के परिवार और गांव वाले सब राज़ी थे और सभी को पता था ऐसा क्यों किया जा रहा है। इस शादी में पूरे गांव के लोगों ने नाच-गाने के साथ सारी रस्में निभाई और उसके बाद कुत्ते को बाकायदा विदा कराकर घर लाया गया। इतना ही नहीं, शादी से पहले दूल्हा बना कुत्ता आम दूल्हे की तरह कार में सवार होकर आया और लड़की के घर वालों सहित पूरे गांव ने उसका स्वागत-सत्कार किया।

पिछले दिनों हमारे देश का अधिकांश भाग कमज़ोर मानसून के भयंकर संकट से गुज़रा। देश के हर कोने में अंधविश्वासी लोगों ने तरह-तरह के टोटके कर डाले। पानी डालकर कीचड़ में लोटमलोट तो हर जगह देखने को मिली। मानसून की देरी से विचलित कर्नाटक के शिमोगा ज़िले में देवरा नर्सिपुरा गांव के एक मंदिर में ग्रामीणों ने इंद्र देवता को मनाने के लिए गधों और मेंढकों का ब्याह तक रचा डाला। विवाह से पहले गधों को स्नान कराया गया और फूलों से सजा कर जुलूस निकाल पूरी धूमधाम के साथ विवाह के लिए ले जाया गया। इसी प्रकार सोराब के निकट बोम्मनाहल्ली में लोगों ने अच्छी बारिश की आस में पास के तालाब से लाए मेंढकों का ब्याह कराया। उत्तरप्रदेश में एक युवक ने बारिश के लिए भूखा-प्यासा रह कर चार दिन तक आराधना की, जिससे उसकी मौत हो गई।

हम जापान की तकनीक लेकर अपने देश में भले ही बुलेट ट्रेन चला लें, लेकिन जब तक हमारे देश के लोगों का दृष्टिकोण वैज्ञानिक नहीं होगा तब तक हम वास्तविक विकास नहीं कर सकते।

जवाहर लाल नेहरू का मानना था कि विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी की मदद के बिना देश तरक्की नहीं कर सकता। उन्होंने कहा था कि हम चाहें जितनी भी प्रयोगशालाएं

स्थापित कर लें, जितने भी यंत्र या तकनीकें विकसित कर लें, हमारा देश तब तक आगे नहीं बढ़ सकता जब तक हमारी जनता का दृष्टिकोण वैज्ञानिक नहीं बन जाता। उनके अनुसार, वैज्ञानिक दृष्टिकोण एक विशेष मानसिकता है, जो हमें हर घटना या परंपरा या धार्मिक सिद्धांत को तर्क की कसौटी पर कसने के लिए प्रेरित करती है, उसे ईश्वरीय इच्छा नहीं मानती। वह किसी वस्तु या घटना के बारे में क्या, क्यों और कैसे जानने की जिज्ञासा पैदा करती है और ज्ञान प्राप्त करने की लालसा उत्पन्न करती है।

यदि देखा जाए तो टेक्नॉलॉजी अपनाने और वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाने, दोनों में बड़ा अंतर है। यदि विज्ञान की शिक्षा प्राप्त करके शिक्षक बन जाने अथवा वैज्ञानिकों की श्रेणी में आ जाने के बावजूद हमारी सोच यानी जीवन और जगत के प्रति हमारा दृष्टिकोण वही पुराना और किन्हीं अर्थों में अवैज्ञानिक बना है तो इसे विरोधाभास ही कहा जाएगा। हमारे व्यवहार से यह विरोधाभास नहीं झलकना चाहिए। विज्ञान की जानकारी होना या वैज्ञानिक सोच से परिपूर्ण होना, दोनों अलग-अलग बातें हैं। पढ़े-लिखे और उच्च शिक्षा प्राप्त लोग ढोंगी बाबाओं के प्रति अपार आस्था रखते दिखाई देते हैं।

एक ओर आज हम शिक्षित हुए हैं वहीं उपभोगवाद में उलझ कर अवसाद के शिकार भी कम नहीं हुए हैं। अवसादग्रस्त व्यक्ति अंततः कृपा की तलाश करते-करते कभी-कभी ऐसे व्यक्तियों की शरण ले लेता है जो आस्था का सहारा लेकर अंधविश्वास का विष परोसते हैं। निर्मल बाबा का सच सामने आने के बाद आस्था के एक और बड़े व्यापारी का नाम सामने आया है - पॉल दिनाकरन। स्वयं को प्रभु ईशु की विशेष कृपा पाने की घोषणा करने वाले पॉल दिनाकरन। शाम को आयोजित उनकी सभा में लाखों लोग शामिल होते हैं, लेकिन पॉल साहब की यह कृपा फ्री में नहीं होती, इसके लिए पैसा खर्च करना पड़ता है, जो गरीब आदमी के बस के बाहर है। निर्मल बाबा ने जहां आस्था के नाम पर जनता की गाढ़ी कमाई के 148 करोड़ रुपए जमा किए हैं, वहीं पॉल दिनाकरन के पास 5000 करोड़ रुपए का खज़ाना है। ऐसे लोग समाज और वैज्ञानिक सोच, दोनों के लिए घातक हैं और अपनी सभा से लोगों को मानसिक मरीज़ बना रहे हैं।

आज अनेक ऐसे बाबा, तांत्रिक, और फकीर हैं, जो किसी न किसी तरह लोगों को ठग रहे हैं। कुछ बाबाओं के अपने टी.वी. चैनल हैं, जिसके माध्यम से वे लोगों को लगातार आकर्षित करते रहते हैं। ऐसे कथित बाबाओं पर शिकंजा कसने की कोई कोशिश नहीं करता क्योंकि इन सबको राजनीतिक संरक्षण प्राप्त है। देश के बड़े-बड़े नेता और अधिकारी इनके भक्त हैं।

जब तक सभ्य समाज है तब तक दाभोलकर जैसे लोग जन्म लेते रहेंगे, लेकिन एक ज्वलंत प्रश्न यह है कि अंधविश्वास के अंधेरे में रोशनी की किरण लाने के लिए भला कोई काला जादू विरोधी कानून बन भी जाए तो अंधविश्वासी समाज में उससे कितना फायदा होगा?

आज देश में सरकारी और गैर सरकारी स्तर पर वैज्ञानिक लोकप्रियकरण कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं। देश की चौथी विज्ञान नीति (साइंस, टेक्नॉलॉजी एंड इनोवेशन यानी एसटीआई) में माना गया है कि सामान्य जनमानस को आधुनिक विज्ञान और प्रौद्योगिकी के लाभों से परिचित कराने और लाभ पहुंचाने के संदर्भ में विज्ञान के बारे में लोगों की समझ एक महत्वपूर्ण आयाम है। इसमें विज्ञान अथवा वैज्ञानिक प्रवृत्ति को समाज के सभी वर्गों में बढ़ावा देने की आवश्यकता पर बल दिया गया है। इस हेतु भविष्य में राष्ट्रीय ज्ञान नेटवर्क जैसे साधनों का उपयोग करके प्रभावी विज्ञान संचार पद्धतियों को शुरू किया जाएगा। अंधविश्वास के नाग का अंत करने के लिए देश में विज्ञान लोकप्रियकरण के प्रयास जारी हैं। ***(स्रोत फीचर्स)***